[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **1068** **H**

Unique Paper Code : 205302

Name of the Course : **B.A.(Honours) Hindi**

Name of the Paper : Sahity-Chintan-2

Semester : III

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(2) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसके तत्त्वों का विवेचन कीजिये। 15

अथवा

आख्यानपरक कविता का अर्थ स्पष्ट करते हुए किन्हीं दो अख्यानपरक कविताओं का परिचय दीजिये।

P.T.O.

2. किसी एक पर टिप्पणी कीजिए : 7

(क) फैंटेसी ओर भावाभास

(ख) आत्मकथा

3. साहित्य के मूल्यांकन में 'लोकमंगल' आधुनिक काव्य मूल्य कैसे है ? स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

रूप और वस्तु की अवधारणा को स्पष्ट करें।

4. विसंगति और विडंबना से आप क्या समझते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 10

अथवा

मिथक का अर्थ बताते हुए काव्य में उसके योगदान का उल्लेख कीजिये।

5. 'विरुद्धों का सामंजस्य' की अवधारणा को समझायें। 10

अथवा

मुक्तछंद और छंदमुक्त कविता के अंतर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

6. 'आधुनिकता का प्रश्न : साहित्य के संदर्भ में' शीर्षक निबंध में आधुनिकता की चेतना का विश्लेषण डॉ नगेन्द्र किस तरह करते हैं ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'काव्य में लोकमंगल' निबंध का सार प्रस्तुत कीजिए।

7. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'आधुनिक साहित्य' नयी मान्यतायें' की स्थापनाओं को संक्षेप में लिखें। 8

अथवा

निम्नांकित गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्न के उत्तर दीजिए :

साहित्य कलाकार के आध्यात्मिक सामंजस्य का व्यक्त रूप है और सामंजस्य सौन्दर्य की सृष्टि करता है, नाश नहीं। वह हममें वफादारी, सच्चाई, सहानुभूति, न्यायप्रियता और ममता के भावों की पुष्टि करता है। जहां ये भाव हैं, वहीं दृढ़ता और जीवन है, जहाँ इनका अभाव है, वहीं फूट, विरोध, स्वार्थ-परता है - द्वेश, शत्रुता और मृत्यु है। ... . साहित्य हमारे जीवन को स्वाभाविक और स्वाधीन

बनाता है। दूसरे शब्दों में, उसी की बदौलत मन का संस्कार होता है। यही उसका मुख्य उद्देश्य है। ("साहित्य का उद्‌देश्य': प्रेमचन्द)

(क) साहित्य की सकारात्मक भूमिका को स्पष्ट कीजिये।

(ख) साहित्य का क्या उद्‌देश्य है ?